



Microfinance Institutions Network (MFIN)

ESAF SFB case study

Coverage Report

October 2019

Media Coverage Index

S. No.	Publication Name	Media
1.	Central Chronicle	Print
2.	Dabang Duniya	Print
3.	Swadesh	Print
4	Ispat Times	Print
5.	Pratidin Rajdhani	Print
6.	Aman Path	Print
7.	Tarun Chattisgarh	Print
8.	Agradoot	Print
9.	Dainik Vishwa Pariwar	Print
10.	Prakhar Samachar	Print

Publication	Central Chronicle
Edition	Raipur
Date	20 th October, 2019
Page No.	15

ESAF SFB helps in transforming lives in Chhattisgarh

■ **Aids aspiring women entrepreneurs to be financially independent**

Central Chronicle News

Raipur, Oct 19: Mrs. Kuntibai Viswakarma belongs to Kusrupali, district Mahasamund a small village in Chhattisgarh. Her story of determination and struggle from a dependent individual to an entrepreneur is quite exemplary.

Similar to the other residents of the village, Kuntibai's family was succumbing under the pressure of poverty. Without much income contribution from her husband and with two growing adolescent boys, the family's expenses were getting unmanageable. Her life took a complete turn when she became a member of ESAF SFB in 2007 from where she took up to 18 cy-

cles of loans gradually increasing in value. She not only repaid the loans on time with consistent earnings but also helped 18 other families in identify in income source.

ESAF SFB's initial loan offering of Rs. 4000 kick-started Kuntibai's business as a local vegetable seller and generated her daily income of around Rs. 400-500. The growing expenses of a family of 4 got her thinking big. So, after successfully repaying her 1st loan, she took a 2nd loan of Rs. 8000 to buy a two-wheeler in order to spread her business further and thus was able to increase her family's daily income considerably. During 2009-12, she took another loan to rent a shop where she sold other essentials along with vegetables. She further bought a second-hand auto-rickshaw to offer mobile grocery services. Working in a systematic manner gave a boost to Kuntibai's ambi-

tions to start a new business of tea packaging and candle making at a large scale where she employed 7 women who were paid daily wages. To expand the delivery services of her products, she took yet another loan to buy a Maruti Omni. Later in 2015, Kuntibai took a loan for borewell connection & toilet facility at her house. Her slow and systematic progress along with timely re-payment of her dues made her eligible for loans of a higher value and also reflected well on her credit ratings.

Through the support of ESAF SFB she was also able to purchase sewing machines and employed 4 women for stitching on daily wages including a sales person. Kuntibai claims that with all these loans from ESAF SFB, her family's income grew considerably and as a result her income became sustainable to an extent that they were able to provide

employment to other people who were struggling for financial stability. ESAF Small Finance Bank formerly known as ESAF Microfinance is an Indian small finance bank providing banking services and small loans to the underbanked.

Before becoming a bank, ESAF was a NBFC-MFI, licensed by the RBI and headquartered in Thrissur city of Kerala. Last year, ESAF was the first bank from India to become a member of the GABV- Global Alliance for Banking on Values, a network of sustainable banks including credit unions, community banks and microfinance banks around the world, who work towards the goal of touching one billion lives by 2020 through sustainable banking. So far, ESAF has brought approximately over 30 lakh women into the financial inclusion space across 15 states in India.

Publication	Dabang Duniya
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	9

कुन्तीबाई बनी आर्थिक स्वावलम्बी

दबंग रिपोर्टर रायपुर

श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा एक छोटे से गांव कुसरुपाली, जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है।

गांव के दूसरे लोगों की तरह कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फंसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ईएसएफ एसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उन्होंने यहाँ से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की। ईएसएफ एसएफबी से मिले 4000 रुपये के शुरूआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया। ऐसे में, अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक चुकाने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को फैलाने की सोची और एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण लिया। इस तरह वह



अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान, उन्होंने एक दुकान किराये पर लेने के लिए नया ऋण लिया, जहाँ उन्होंने सब्जियों के साथ अन्य दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरू की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सेकेंडहैंड ऑटो-रिक्शा खरीदा। व्यवस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला, इसके साथ उन्होंने बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिलिवरी सर्विस का विस्तार करने के लिए, उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में, कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और शौचालय की सुविधा के लिए भी ऋण लिया।

Publication	Swadesh
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	02

छत्तीसगढ़ की कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वालंबी

**महिला उद्यमियों को
आर्थिक रूप संपन्न बना रहा
है ईएसएफएएसएफबी**

रायपुर। श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव कुसरुपाली जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है।

माँ के दूसरे लोगों की तरह कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में पंसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ईएसएफएएसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उन्होंने यहां से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई।



उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की। ईएसएफएएसएफबी से मिले 4000 रुपये के शुरुआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का

फैसला किया। ऐसे में अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक चुकाने के बाद उन्होंने अपने व्यवसाय को फैलाने की सोची और एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण लिया। इस तरह वह अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान उन्होंने एक दुकान किराये पर लेने के लिए नया ऋण लिया जहाँ उन्होंने सब्जियों के साथ अन्य दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरू की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सेकेंड हैंड ऑटो रिक्शा खरीदा।

व्यवस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला। इसके साथ-ही बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिलिवरी सर्विस का विस्तार करने के

लिए उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और शौचालय की सुविधा के लिए भी ऋण लिया। बकाया ऋण राशि के समय पर पुनरुत्पादन के साथ धीमी मगर व्यवस्थित प्रगति ने उन्हें अधिक राशि के ऋण का पात्र बना दिया और इससे उनकी क्रेडिट रेटिंग भी अच्छी दिखने लगी। ईएसएफएएसएफबी की मदद से वह सिलाई मशीन खरीद सकीं और एक सेल्सो पर्सन सहित दैनिक वेतन के आधार पर सिलाई के लिए 4 महिलाओं को काम पर रख लिया। कुन्तीबाई मानती हैं कि ईएसएफएएसएफबी के इन सभी ऋणों के साथ उनके परिवार की आय में काफी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप उनकी आय उस स्तर तक पहुंच गई जिससे कि वे ऐसे लोगों को रोजगार प्रदान करने में भी सक्षम हो गईं जो वित्तीय स्थिरता पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

Publication	Ispat Times
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	03

छत्तीसगढ़ की कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वालंबी

रायपुर। श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव कुसुरुपाली, जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है।

गाँव के दूसरे लोगों की तरह, कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फँसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ईएसएफ एसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उन्होंने यहाँ से

18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की।

ईएसएफ एसएफबी से मिले 4000 रुपये के शुरुआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया। ऐसे में, अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक

चुकाने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को फैलाने की सोची और



एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण लिया। इस तरह वह अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान, उन्होंने एक दुकान किराये पर लेने

के लिए नया ऋण लिया, जहाँ दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरू की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सेकेंड हैंड ऑटो-रिक्शा खरीदा।

ठरावस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला, इसके साथ उन्होंने बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को

नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिलिवरी सर्विस का विस्तार करने के लिए, उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में, कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और शौचालय की सुविधा के लिए भी ऋण लिया।

बकाया ऋण राशि के समय पर पुनः भुगतान के साथ धीमी मगर व्यवस्थित प्रगति ने उन्हें अधिक राशि के ऋण का पात्र बना दिया और इससे उनकी क्रेडिट रेटिंग भी अच्छी दिखने लगी। ईएसएफ एसएफबी की मदद से वह सिलाई मशीन खरीद सकी और एक सेल्सी पर्सन सहित दैनिक वेतन के आधार पर सिलाई के लिए 4 महिलाओं को काम पर रख लिया।

Publication	Pratidin Rajdhani
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	08

छत्तीसगढ़ की कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वालंबी

महिला उद्यमियों को आर्थिक रूप संपन्न बना रहा है ईएसएफ एसएफबी

प्रतिदिन नेटवर्क, रायपुर

श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव कुसरुपाली, जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है।

गाँव के दूसरे लोगों की तरह, कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फँसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ईएसएफ एसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह

से बदल गई। उन्होंने यहां से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की।

ईएसएफ एसएफबी से मिले 4000 रुपये के शुरुआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया। ऐसे में, अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक चुकाने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को फैलाने की सोची और एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण



लिया। इस तरह वह अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान, उन्होंने एक दुकान किराये पर लेने के लिए नया ऋण लिया, जहाँ उन्होंने सब्जियों के साथ अन्य दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरू की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सेकेंड हैंड ऑटो-रिक्शा खरीदा।

व्यवस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की

महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला, इसके साथ उन्होंने बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिलिवरी सर्विस का विस्तार करने के लिए, उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में, कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और शौचालय की सुविधा के

लिए भी ऋण लिया।

बकाया ऋण राशि के समय पर पुनः भुगतान के साथ धीमी मगर व्यवस्थित प्रगति ने उन्हें अधिक राशि के ऋण का पात्र बना दिया और इससे उनकी क्रेडिट रेटिंग भी अच्छी दिखने लगी। ईएसएफ एसएफबी की मदद से वह सिलाई मशीनें खरीद सकीं और एक सेल्सी पर्सन सहित दैनिक वेतन के आधार पर सिलाई के लिए 4 महिलाओं को काम पर रख लिया।

कुन्तीबाई मानती हैं कि ईएसएफ एसएफबी के इन सभी ऋणों के साथ, उनके परिवार की आय में काफी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप उनकी आय उस स्तर तक पहुँच गई, जिससे कि वे ऐसे लोगों को रोजगार प्रदान करने में भी सक्षम हो गई, जो वित्तीय स्थिरता पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

Publication	Aman Path
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	13

छत्तीसगढ़ की कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वालंबी

महिला उद्यमियों को आर्थिक रूप संपन्न बना रहा है ईएसएफ एसएफबी

अमन पथ न्यूज

रायपुर। श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव कुसरुपाली, जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके हृदय संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है। गाँव के दूसरे लोगों की तरह, कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फँसा हुआ था।

घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ईएसएफ

एसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उन्होंने यहाँ से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों की भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की। ईएसएफ एसएफबी से मिले 4000 रुपये के शुरूआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया। ऐसे में, अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक



चुंकाने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को फैलाने की सोची और एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण लिया। इस तरह वह अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान,

उन्होंने एक दुकान किराये पर लेने के लिए नया ऋण लिया, जहाँ उन्होंने सब्जियों के साथ अन्य दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरू की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सैकेड हैंड ऑटो-रिक्शा

खरीदा। व्यवस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला, इसके साथ उन्होंने बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिस्लिबरी सर्विस का विस्तार करने के लिए, उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में, कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और शौचालय की सुविधा के लिए भी ऋण लिया। बकाया ऋण राशि के समय पर पुनः भुगतान के साथ धीमी मगर व्यवस्थित प्रगति

ने उन्हें अधिक राशि के ऋण का पात्र बना दिया और इससे उनकी क्रेडिट रेटिंग भी अच्छी दिखने लगी। ईएसएफ एसएफबी की मदद से वह सिलाई मशीनें खरीद सकीं और एक सेल्फी पर्सन सहित दैनिक वेतन के आधार पर सिलाई के लिए 4 महिलाओं को काम पर रख लिया। कुन्तीबाई मानती हैं कि ईएसएफ एसएफबी के इन सभी ऋणों के साथ, उनके परिवार की आय में काफी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप उनकी आय उस स्तर पर तक पहुँच गई, जिससे कि वे ऐसे लोगों को रोजगार प्रदान करने में भी सक्षम हो गई, जो वित्तीय स्थिरता पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

Publication	Tarun Chattisgarh
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	03

छत्तीसगढ़ की कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वावलंबी

रायपुर , 19 अक्टूबर। श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गांव कुसरपाली, जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है। गाँव के दूसरे लोगों की तरह, कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फंसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ईएसएफ एसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उन्होंने यहां से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की। ईएसएफ एसएफबी से मिले 4000 रुपये के शुरुआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया।

Publication	Agradoot
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	05

कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वावलम्बी

रायपुर। श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव कुसरपाली, जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है।

गाँव के दूसरे लोगों की तरह, कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फंसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था। 2007 में ईएसएफ एसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह

से बदल गई। उन्होंने यहां से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की।

ईएसएफ एसएफबी से मिले 4000 रुपये के शुरुआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया। ऐसे में, अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक चुकाने के बाद, उन्होंने अपने

महिला उद्यमियों को आर्थिक रूप से संपन्न बना रहा है ईएसएफ एसएफबी

व्यवसाय को फैलाने की सोची और एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण लिया। इस तरह वह अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान, उन्होंने एक दुकान किराये पर लेने के लिए नया ऋण लिया, जहाँ उन्होंने सब्जियों के साथ अन्य दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरू की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सेकेंड हैंड ऑटो-रिक्शा खरीदी।

व्यवस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला, इसके साथ उन्होंने बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिलिवरी सर्विस का विस्तार करने के लिए, उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में, कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और शौचालय की सुविधा के लिए भी ऋण लिया। बकाया ऋण राशि के समय पर पुनः भुगतान के साथ धीमी मगर व्यवस्थित

प्रगति ने उन्हें अधिक राशि के ऋण का पात्र बना दिया और इससे उनकी क्रेडिट रेटिंग भी अच्छी दिखने लगी। ईएसएफ एसएफबी की मदद से वह सिलाई मशीनें खरीद सकीं और एक सेल्सी पर्सन सहित दैनिक वेतन के आधार पर सिलाई के लिए 4 महिलाओं को काम पर रख लिया। कुन्तीबाई मानती हैं कि ईएसएफ एसएफबी के इन सभी ऋणों के साथ, उनके परिवार की आय में काफी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप उनकी आय उस स्तर तक पहुंच गई, जिससे कि वे ऐसे लोगों को रोजगार प्रदान करने में भी सक्षम हो गईं, जो वित्तीय स्थिरता पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

Publication	Dainik Vishwa Pariwar
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	02

महिला उद्यमी के रूप में महासमुंद की कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वावलंबी

ईएसएफ एसएफबी गरीब महिलाओं को बना रहा है आर्थिक रूप से संपन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्थित जिला महासमुंद के एक छोटे गांव कुसरूपाली की रहने वाली कुन्तीबाई अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है। गरीबी की दलदल में फंसा कुन्तीबाई व उसके पति की कम आय और आर्थिक तंगी से परेशान उनका परिवार गरीबी की मार से बाहर तब निकल पाया जब वे 2007 में ईएसएफ एसएफबी से जुड़े। जिसके बाद उनकी पूरी जिंदगी ही बदल गई। कुन्तीबाई ने हिम्मत के साथ ईएसएफ एसएफबी से कुल 18 बार ऋण लिया और हर बार अपने परिवार की आर्थिक सुदृढ़ीकरण कर दूसरों को भी इससे जुड़ने प्रेरित की। कुन्तीबाई सबसे पहले चार हजार रुपये की ऋण लेकर सब्जी-भाजी की धंधा



शुरू की। धंधा चल निकला। बढ़ते आय और खर्च के चलते कुन्तीबाई ने आय के स्रोत को बढ़ाने की सोची और दूसरी बार आठ हजार का लोन लेकर दोपहिया वाहन खरीदा लिया। इस तरह अपने परिवार की आय के स्रोत में निरंतर इजाफा होने से नए हौसले के साथ एक दुकान किराए पर लेने के लिए फिर से ऋण लिया। उसने सब्जी के साथ दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचने शुरू किये जिसके लिए चलती-फिरती किराना दुकान खोलने के लिए एक सेकंड हैंड ऑटो-रिक्षा खरीदा। इस तरह व्यवस्थित तरीके से काम

करने पर कुन्तीबाई व उसके परिवार वालों की महत्वाकांक्षाओं ने आकार लेना शुरू कर किया और बड़े पैमाने पर चाय पैकेजिंग व मोमबत्ती बनाने का काम भी शुरू कर दिया।

सात अन्य महिलाओं को अपने व्यवसाय से जोड़ कर उसने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए पुनः ऋण लेकर कुन्तीबाई ने अपने घर में बोरवेल कनेक्शन और शौचालय का निर्माण भी करा ली। इस तरह ऋण लेकर समय पर इसकी किस्त अदायगी के साथ कुन्ती बाई आत्मनिर्भर बन पाई।

Publication	Prakhar Samachar
Edition	Raipur
Date	19 th October, 2019
Page No.	11

छत्तीसगढ़ की कुन्तीबाई विश्वकर्मा बनी आर्थिक स्वालंबी

रायपुर (प्रखर)। श्रीमती कुन्तीबाई विश्वकर्मा छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव कुसुरुपाली, जिला महासमुंद की रहने वाली हैं। अपने परिवार के सहारे जीवन बिताने से लेकर एक उद्यमी बनने का उनका संघर्ष और उनके दृढ़ संकल्प की कहानी बेहद प्रेरणादायक है।

गाँव के दूसरे लोगों की तरह, कुन्तीबाई का परिवार गरीबी के दलदल में फँसा हुआ था। घर की आमदनी में पति की ओर से कोई विशेष योगदान न होने और बढ़ती उम्र वाले दो किशोर बच्चों के साथ, परिवार का खर्च चलाना मुश्किल होता जा रहा था।

2007 में ईएसएफ एसएफबी की सदस्य बनने के बाद से उनकी जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उन्होंने यहां से 18 बार ऋण लिया और धीरे-धीरे कर्ज राशि में वृद्धि करती गई। उन्होंने न केवल स्थाई

रूप से आमदनी कमाने के साथ समय पर अपना ऋण चुकाया बल्कि 18 अन्य परिवारों को भी आय का स्रोत प्राप्त करने में मदद की। ईएसएफ एसएफबी से मिले

महिला उद्यमियों को आर्थिक रूप संपन्न बना रहा है ईएसएफ एसएफबी

4000 रुपये के शुरुआती ऋण के साथ कुन्तीबाई ने सब्जी बेचने का व्यवसाय शुरू किया और प्रतिदिन लगभग 400-500 रुपये कमाने लगी। 4 लोगों के परिवार के बढ़ते खर्च के चलते उन्होंने बड़ा सोचने का फैसला किया। ऐसे में, अपने पहले ऋण को सफलतापूर्वक चुकाने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को फैलाने की सोची और एक दोपहिया वाहन खरीदने के लिए 8000 रुपये का दूसरा ऋण लिया। इस तरह वह अपने परिवार की दैनिक आय में काफी अधिक वृद्धि कर पाई। 2009-12 के दौरान, उन्होंने एक

दुकान किराये पर लेने के लिए नया ऋण लिया, जहाँ उन्होंने सब्जियों के साथ अन्य दैनिक उपयोग वाली चीजें बेचनी शुरू की। इसके बाद उन्होंने चलती-फिरती किराना दुकान

खोलने के लिए एक सेकेंड-हैंड ऑटो-रिक्शा खरीदा। व्यवस्थित तरीके से काम करने से कुन्तीबाई की महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा मिला, इसके साथ उन्होंने बड़े पैमाने पर चाय की पैकेजिंग और मोमबत्ती बनाने का एक नया व्यवसाय शुरू किया। यहाँ उन्होंने दैनिक वेतन पर 7 महिलाओं को नौकरी पर रखा। अपने उत्पादों की डिलिवरी सर्विस का विस्तार करने के लिए, उन्होंने एक मारुति ओमनी वैन खरीदने के लिए एक और ऋण लिया। इसके बाद 2015 में, कुन्तीबाई ने अपने घर पर बोरवेल कनेक्शन और

शौचालय की सुविधा के लिए भी ऋण लिया। वकाया ऋण राशि के समय पर पुनः भुगतान के साथ धीमी भ्रमर व्यवस्थित प्रगति ने उन्हें अधिक राशि के ऋण का पात्र बना दिया और इससे उनकी क्रेडिट रेटिंग भी अच्छी दिखने लगी।

ईएसएफ एसएफबी की मदद से वह सिलाई मशीन खरीद सकी और एक सेल्सी पर्सन सहित दैनिक वेतन के आधार पर सिलाई के लिए 4 महिलाओं को काम पर रख लिया। कुन्तीबाई मानती हैं कि ईएसएफ एसएफबी के इन सभी ऋणों के साथ, उनके परिवार की आय में काफी वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप उनकी आय उस स्तर तक पहुँच गई, जिससे कि वे ऐसे लोगों को रोजगार प्रदान करने में भी सक्षम हो गई, जो वित्तीय स्थिरता पाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।